International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 105-109
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 10-07-2026
Accepted: 05-08-2026
Publish : 08-08-2026

डॉ. कीर्ति चूण्डावत
सहायक आचार्य
भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

Correspondence:
डॉ. कीर्ति चूण्डावत
सहायक आचार्य
भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

पराई डाल का पंछी : मन की अतृप्त इच्छाओं का सैलाब

डॉ. कीर्ति चूण्डावत

मानवीय मन संवेदनाओं और विचारों का गर्भगृह है । मनुष्य की सारी विचारात्मक अनुभूतियां मस्तिष्क से जुड़ी है परंतु मन का नियंत्रण मनुष्य के संपूर्ण अस्तित्व पर है ।साहित्य इन्हीं मन के विचारों को लेखनी में पिरोने का माध्यम है ।कुछ लेखक मन की आंतरिक चेतना को वाणी देने में सिद्ध हस्त होते हैं इन्हीं लेखकों में अमरकांत का साहित्य कुछ नये संदर्भों को दर्शाता है।उनका साहित्य नयी चेतना और मानसिक अवलोकन द्वारा व्यक्ति के आंतरिक मन की गहन पड़ताल करता है ।वे अपने समय, परिस्थिति एवं समाज के सूक्ष्म अन्वेषक रहे हैं । साहित्यकार के साहित्य पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसके निर्माण की पृष्ठभूमि के मूल रूप में अनेक वैयक्तिक व समसामयिक परिवेश का प्रभाव अवश्य दृष्टिगोचर होता है। वह अपने जीवन अनुभवों को अपने साहित्य में संजोता चलता है।साहित्यकार पर आंतरिक एवं बाह्य परिस्थितियों के प्रभाव देखे जाते रहे हैं।स्वतंत्रता के पश्चात जिन चुनौतियों से समाज, राजनीति एवं व्यक्ति प्रभावित हो रहे थे उन्हीं प्रभावों ने साहित्य को नई धरती प्रदान की ।

अमरकांत ने जिस समय लेखन कार्य प्रारंभ किया वह संधि युग था, जिसमें एक और समाजवादी विचारधारा आधारित साहित्य था तो दूसरी और यथार्थवादी विचारधारा पर आधारित साहित्य।अमरकांत में इन्हीं दोनों धाराओं का समन्वय दिखाई देता है ।उनके साहित्य में यथार्थवाद निखर कर आया है जो तत्कालीन परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज है ।अमरकांत ने यद्यपि लेखनी के प्रारंभ में किसी विचारधारा का दामन नहीं पकड़ा परंतु व्यवसाय के रूप में पत्रकारिता करते हुए उनमें कुछ विचारधाराओं ने दृढ़ता ग्रहण कर ली थी।साहित्यकार के लिए आवश्यक है कि वह अपने समय को ठीक से पहचान कर उसके वास्तविक स्वरूप की अभिव्यक्ति प्रदान करें।

अमरकांत का कथा साहित्य विविधताओं का सम्मिश्रण है उनकी कहानियाँ और उपन्यास जीवन के उन संदर्भों को उठाते हैं जिससे मनुष्य कभी-कभी दूर हो जाना चाहता है या यूं कहें कि उनका कथा साहित्य ऐसे प्रश्न उत्पन्न करता है जिस पर उत्तर देना आसान न हो।अमरकांत की ख्याति के आधार कई कहानियां और उपन्यास रहे हैं उन्हीं में एक चर्चित उपन्यास है पराई डाल का पंछी जो बाद में सुखजीवी के नाम से प्रकाशित हुआ ।उनका यह उपन्यास मध्यमवर्ग के युवा लड़के दीपक की मनोवृत्ति का चित्रण करता है जो दोहरे मानदंडों वाला है ।दीपक अपनी पत्नी के साथ शहर में रहता है, उसके दो बच्चे हैं और वह नौकरी कर घर चला रहा है।दीपक की पत्नी अहिल्या गांव की लड़की है, सुंदर है परंतु कम पढ़ी-लिखी है ।उपन्यास के प्रारम्भ में ही दीपक की पत्नी को उसका इंतजार करते बताया है ।दीपक इतनी देर कभी नहीं करता,आज बहुत देर हो गई है और अहिल्या शहर में स्वयं को अकेला पाकर बेचैन है।वह हिम्मत कर बाहर मदद ढूंढने जाती है और केवल आश्वासन ही प्राप्त कर पाती है।उसके पास दीपक का इंतजार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं।उसका मन अत्यंत भयभीत है।मन के अनुरूप कार्य न हो तो आशा से अधिक आशंकाएं मनुष्य को घेर लेती हैं ।अहिल्या को भी न जाने कैसे - कैसे विचार मन में आते रहते हैं ।उसके लिए इंतजार असहनीय हो रहा था तभी दीपक घर लौट आता है ।

यहीं लेखक पाठकों का दीपक से परिचय कराते हैं।दीपक जानता है कि अहिल्या चिंतित होगी और वह उस चिंता से निपटने का समाधान भी साथ लाया है।वह अहिल्या से बिना कुछ कहे ऐसे बता रहा था जैसे वह गलत तो है पर वह ऐसा दिखाता है जैसे सब कुछ ठीक है।वह अच्छे से जानता था कि उसे कब और क्या करना है ।जब वह यह समझ जाता है कि अहिल्या का क्रोध अब कम हो गया है तभी वह अपने देर से आने का कारण बताने लगता है ।वह अहिल्या से कहता है कि वह समय से ही दफ्तर से

निकल गया था ।घर की ओर आते हुए उसकी साइकिल तांगे वाले से टकरा गई और मामला पुलिस चौकी तक चला गया ।अहिल्या इस वृत्तांत से भयभीत हो जाती है वह दीपक की फिक्र करने लगती है।यही दीपक की कला है।"अहिल्या को चिंतित, दु:खित और रोते देखकर उसे सदा यह संतोष होता था कि वह एक ऐसी स्त्री का पति है जो उसको अपनी समस्त शक्ति से प्यार करती है और उसके लिए कोई भी कुरबानी कर सकती है ।वह यह अपना अधिकार समझता था कि अहिल्या जैसी पतिव्रता स्त्री उसके कष्ट और मजबूरी की बात सुनकर अपना समस्त अभिमान, शिकवा- शिकायत और तकलीफ भूल जाय ।और चूंकि अहिल्या ऐसा ही करती थी इसलिये वह अपने दु:ख, पीड़ा और लाचारी की बात करके पत्नी को निरस्त्र करने में सदा सफल होता था ।"१ वह एक विशिष्ट मानसिक अवस्था का निर्माणकर्ता है।वह स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिए दांव -पेचों का प्रयोग करता है ।

उस रात उसके साथ ऐसी कोई घटना घटित ही नहीं हुई वरन् वह दोस्तों के साथ व्यस्त था।जहां उसे अपनी झूठी शान दिखानी होती है । यह उपन्यास परत-दर-परत दीपक के कई रूपों को उजागर कर उसकी मानसिक अवस्था एवं व्यवहार के दोहरेपन को दर्शाता है ।

अगले दिन दीपक की आशा के विपरीत घटना घटित होती है।उसका नया मित्र आनंदकुमार टंडन बिना पूर्व सूचना के उसके घर आ जाता है ।दीपक इस अप्रत्याशित स्थिति के लिए तैयार नहीं था।इसका कारण वह आवरण था जो उसने अपने दोस्तों के मध्य स्वयं के लिए बना रखा था।दीपक अपने दोस्तों में शेखीबाज था, वह स्वयं को तथा अपने घर- परिवार को लेकर बहुत बड़ी-बड़ी बातें करता था परंतु वह वास्तविकता से बहुत दूर था ।दीपक की नौकरी से उसका खर्चा अच्छे से चल सकता है परंतु एक तो वह बेपरवाह है और दूसरा वह खर्चीले स्वभाव का है जिससे उसका परिवार अभाव में जीने को विवश है ।घर के प्रति उसके इस रूखे रवैये के दो कारण है।अपने यौवन काल से ही वह महत्वाकांक्षी रहा है उसे एक सुंदर और पढ़ी-लिखी पत्नी की आस थी जो पूरी ना हो सकी ।जिसके कारण वह सारा दोष अहिल्या को देकर बरी हो जाना चाहता है।दूसरा वह सच में घर की ओर ध्यान न देने वाला बेपरवाह इंसान है, जिसकी स्वयं की इच्छाएं और अभिलाषाएं बहुत विस्तृत है और जिम्मेदारियां से मुंह मोड़ना उसे सदा ही आसान लगता आया है ।

आज टंडन के अचानक घर आने से उसे लगा जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई है।आज पहली बार वह अपने घर को और अपने बच्चों को ध्यान से देखता है और यह महसूस करता है कि सब कुछ कितना बेढ़गा है ।दीपक उन व्यक्तियों में से है जो स्वयं की साज- संवार करता है और अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन रहता है ।आज घर की हालत देखकर वह फिर से अहिल्या को इसका दोष देता है ।आज अहिल्या भी अपने मन का गुबार निकालती है ।" हर बुराई की जड़ मैं ही हूं ।साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि तुम जाहिल-जपाट हो, तुमसे कुछ नहीं हो सकता ।आपको तो पहले ही पता था कि मैं पढ़ी-लिखी नहीं, फिर किसी मन की लड़की से शादी न करके मुझसे क्यों की थी? मैं तो खूब जानती हूं कि मैं जान निकाल कर रख दूंगी तो भी किसी को संतोष न होगा ।दिन रात कोल्हू के बैल की तरह जुटी रहती हूं, तिस पर यह हाल है ।कोई दूसरी होती तो पता चलता।"२ दीपक को अहिल्या से यह उम्मीद नहीं थी।आज जो उसने दीपक को आइना दिखाया उससे उसके अहं को चोट पहुंची थी।"उसकी बात का जवाब देकर अहिल्या ने पति के अहं की अवहेलना की थी ।इसके अलावा वह आशा करता था कि अहिल्या इस नाजुक अवसर पर कहीं-न-कहीं से कुछ अवश्य प्रबंध करेगी और उसको बाजार नहीं जाना पड़ेगा ।परंतु अहिल्या का वक्तव्य जब बंद ना हुआ तो उसके लिए सब-कुछ असह्य हो गया ।वह नहीं समझ सका कि उसके आदेशों का चुपचाप पालन करने वाले स्त्री अपनी अकारण आलोचना से कैसे क्रुध हो गयी थी ।"३ मनुष्य अपने अहं पर चोट होने पर बौखला जाता है और वह परिस्थितियों का इसी रूप में अवलोकन करता है।"आधुनिक समाज में पुरुष की बौद्धिकता ज्यों -ज्यों बढ़ती चली जा रही है त्यों -त्यों उसका अहं भाव तीव्र से तीव्रतर व्यापक से व्यापकतर रूप ग्रहण करता चलता है।अपने तृप्त न होने वाले अहंभाव की अस्वभाविक मूर्ति की चेष्टा में जब उसे पग-पग पर स्वाभाविक सफलता मिलती है तो वह बौखला उठता है और उस बौखलाहट की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप वह आत्म -विनाश के पहले अपने आसपास के विनाश की योजना में जुट जाता है ।"४ लेखक ने परिस्थितियों का ऐसा निर्माण किया है जिससे दीपक वास्तविकता को समझ सके ।यह पहला मौका है परंतु दीपक वास्तविक स्थिति को नजरअंदाज करने में माहिर है, या यूं कहें कि ऐसे चरित्र स्वयं की ही दुनिया में रहते हैं और परिस्थितियों को अपने अलग चश्मे से ही देखते हैं।लेखक दीपक के रूप में ऐसा चरित्र गढ़ते हैं जो आशाओं और आकांक्षाओं की चौड़ी दीवार पर बैठा है और जहां से उसे पता है कि वह नीचे धरातल पर नहीं गिरेगा ।

दीपक टंडन के लिए नाश्ते की व्यवस्था कर वापस आकर अपने देरी से आने के कारण को नजरअंदाज करने के लिए बातों का सिलसिला छेड़ देता हैं ।पहले दफ्तर की बातें और फिर बात राजनीति, देश और व्यवस्था तक जा पहुंचती है ।इस युग के प्रत्येक व्यक्ति को राजनीति एवं देश से अपेक्षाएं तो थी पर उन अपेक्षाओं के अनुरूप न तो देश चला न राजनीति ।ऐसे में एक कुंठा, एक तीखी कसक प्रत्येक व्यक्ति के मन में देखी गई ।जब मनुष्य स्थिति के अनुरूप कुछ अच्छा नहीं कर पाता तो वह एक आलोचक के रूप में उसका विश्लेषण कर स्वयं को समस्या के समाधानकर्त्ता के रूप में देखता है ।दीपक अपने उत्तेजित विचारों से सभी को प्रभावित करने का प्रयास करता है वह विचार संप्रेषण की कला को बहुत अच्छे से जानता है कब किस बात का समर्थन करना है और कब अपने तर्कों से सामने वाले को चित्त करना ।दीपक का व्यक्तित्व कई अंदरूनी सतहों में लिपटा हुआ दिखाई देता है ।उपन्यास पढ़ते हुए वह एक रहस्यमयी व्यक्तित्व के रूप में उभरता है तो अगले ही पल वह छिछला सा प्रतीत होता है ।

टंडन उस दिन अपनी बेटी के जन्मदिन का न्योता देने आया था और दीपक को सपरिवार आमंत्रित कर गया था । दीपक अपने मित्रों के यहां कभी परिवार के साथ ना जाता । उसका मन उसे

इसकी इजाजत नहीं देता था ।दीपक एक विशिष्ट मानसिक स्थिति का शिकार है जब हम देखते हैं कि वह अपने मित्रों की पत्नियों के साथ अलग व्यवहार करता है ।वहां वह पढ़ी-लिखी,स्वतंत्र विचारों वाली स्त्रियों की प्रशंसा करता है परंतु अपनी पत्नी के प्रति वह पारंपरिक सोच रखता है ।उसमें एक कुंठा आ गई है कि उसकी पत्नी पढ़ी-लिखी नहीं है जिससे वह उसे किसी से नहीं मिलाना चाहता है वह एक अनजाने भय में जीता रहता है ।उस रात भी उसने अहिल्या को आमंत्रण के बारे में नहीं बताया और उसे झूठ बोला कि किसी मित्र के यहां शादी समारोह में थोड़ी देर के लिए जाकर आ जाएगा। टंडन और उसकी पत्नी निर्मला खुले विचारों के हैं दीपक उनके घर में बेहिचक आता जाता रहता है कभी-कभी निर्मला को यह बात चुभती है और उसने एक बार टंडन को इस बारे में बताया भी ।"निर्मला को यह सब अच्छा ना लगता वह दीपक के आने पर भागती छिपती रहती।उसने अपने पति से कई बार कहा कि वह उसको बैठके में रोके रहे,औरत की जाति! पता नहीं कैसी हालत में वह हो? उसको शर्म से गड़ना पड़ता है।निर्मला ने कई बार कहा कि दीपक की नीयत ठीक नहीं है लेकिन टंडन ने उसको हंस कर टाल दिया ।"५ टंडन को लगता था कि वह खुले दिल का है और उसकी नीयत में ऐसा कोई खोट नहीं है ।माना जाता है कि मनोविश्लेषक मन की बात जानने में माहिर होता है परंतु स्त्री की यह विशेषता है कि वह बहुत जल्दी पुरुष के आंतरिक मन और नीयत को भांप जाती है यह उसके अनुभव आधारित क्षेत्र हैं जिसमें वह कुशल है ।

टंडन की बिटिया के जन्मदिन पर दीपक के कुछ और भी मित्र आए उनमें उसके पुराने मित्र विश्वनाथ तिवारी भी थे ।वे दीपक की दोस्ती परख चुके थे और उसके व्यवहार को अब ठीक से जानते थे ।वह शायद ऐसे ही किसी अवसर की प्रतीक्षा में थे और मौका पाकर उन्होंने उसका विचित्र चरित्र सबके सामने खोल कर रख दिया ।वे दीपक को सच्चाई का आईना दिखाते हुए कहते हैं कि "जब तुम इस सामाजिक व्यवस्था की निंदा करते हो तो इसलिये कि तुमको कोई ऊंचा ओहदा नहीं मिला ।उसके पीछे कोई व्यापक उद्देश्य नहीं होता।जब तुम अपनी पत्नी की आलोचना करते हो तो उस समय तुम्हारे मन में दूसरे की पत्नी हड़पने की इच्छा मचलती रहती है, और जब तुम स्त्रियों की स्वतंत्रता का समर्थन करते हो तो यह सोचकर कि यह आजादी रहती तो यूरोप आदि देशों की तरह यहां की स्त्रियों में भी नैतिकता न रहती और तुमको व्यभिचार करने का पूरा मौका....।"६ विश्वनाथ दीपक की सारी करतूते सबके सामने ला देते हैं और दीपक निरुत्तर हो जाता है वह क्रोधित तो होता है परंतु स्वयं का राज खुलने की उम्मीद उसे इस तरह कभी न थी ।तिवारी के खुलासे के बाद माहौल थोड़ा बदल जाता है ।दीपक जल्दी से उस जगह से निकल जाना चाहता है ।वहां से निकलते हुए वह स्वयं आत्म मंथन करने लगा और उसने कहा कि " सचमुच यदि तीन शब्दों में उसका परिचय दिया जाए तो कहा जाएगा महत्वाकांक्षा, प्यार और स्वार्थ ।"७ वह जानता था कि वह कैसा है, परंतु आज उसने स्वयं को दूसरों की निगाह से देखा और उसे स्वयं से घृणा हुई।उसने मन ही मन पवित्र जीवन जीने का निश्चय किया ।वह उज्जवल एवं पवित्र भविष्य के सपने देखने लगा ।

अहिल्या के घर में उसी दिन दोपहर को एक पड़ोसन अपनी यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाली बेटी रेखा के साथ आयी ।वे अहिल्या के घर से पानी ले जाने की व्यवस्था करने आयी थी, क्योंकि उसके यहां पानी का नल था जो पूरी बस्ती में किसी के पास न था ।सब सरकारी नल से पानी भरते थे जहां ज्यादा ही भीड़ रहती थी ।वह स्त्री अहिल्या के गांव के पास की ही थी इससे उन्होंने उससे घनिष्ठता स्थापित की ।वह पहले ही मुलाकात में उसे बबुनी यानी बिटिया तथा दीपक के लिए मेहमान (जमाई) जैसे शब्दों से सम्बोधित करने लगी ।अहिल्या आज बड़ी प्रसन्न थी क्योंकि अनजान शहर में उसे कोई अपना मिल गया था ।जब दीपक घर लौटा तो वह कुछ बदला - बदला सा था ।अहिल्या ने दीपक को सारी बात बताई, पहले तो दीपक ने ध्यान नहीं दिया पर जैसे ही उसने रेखा का नाम सुना वह सतर्क हो गया ।अहिल्या ने बताया कि रेखा यूनिवर्सिटी में पढ़ती है, सुंदर है और उसे किताबें पढ़ने का बहुत शौक है ।यह सब सुनकर ही दीपक जो निश्चय रास्ते में करता आया था वह सब भूल गया और अब उसका दिमाग कुछ ओर ही दिशा में चलने लगा ।दीपक अपने पुराने कृत्यों से सीख ले चुका था इस बार उसने कोई जल्दबाजी न करने का निर्णय लिया ।उसने अहिल्या की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी ।

इधर रेखा का भी अहिल्या के घर आना जाना बढ़ गया था ।वह अहिल्या की मदद करने घर आती रहती और इसी बहाने दीपक के यहां से कुछ किताबें पढ़ने को ले जाती ।दीपक भी रेखा से मिलकर उससे प्रभावित हुआ परंतु उसने स्वयं को बहुत ही संयत रखा था ।रेखा और दीपक के बीच धीरे-धीरे व्यवहार बढ़ने लगा वे साथ बैठकर बहस करते, दीपक अपने ज्ञान से रेखा को प्रभावित करने का प्रयास करता रहता ।वह जाने - अनजाने रेखा से यूनिवर्सिटी में भी मिलने लगा ।उसे पता चल गया कि रेखा भी अब उसकी ओर आकर्षित हो रही है ।दीपक का व्यवहार अहिल्या के प्रति बहुत नरम हो गया है वह एक पर्दा अपने और रेखा के रिश्ते के बीच चाहता है जिसकी अहिल्या को भनक भी ना हो ।वह अहिल्या के साथ घर के कामों में हाथ बंटाता, इससे अहिल्या भी प्रसन्न रहती और रेखा पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव हो रहा था वह भी दिन-ब-दिन दीपक की ओर आकर्षित हो रही थी ।

दीपक द्वारा लायी गई किताबें रेखा पर वैसा ही असर कर रही थी जैसा दीपक चाहता था ।वह ऐसे सस्ते उपन्यास लाता जिसमें गंभीरता नहीं वरन अनैतिकता के सारे द्वारा होते ।रेखा उन्हें पढ़कर उन नायिकाओं में खुद को साकार करने का प्रयत्न करती ।" रेखा नई नारी का नेतृत्व ग्रहण करना चाहती थी, वह दुनिया में कुछ कर दिखाना चाहती थी ।वह सारे संसार को अपनी सुंदरता और योग्यता से अभिभूत कर देना चाहती थी।और जैसे इस महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने के लिए ही वह दीपक को प्यार करने लगी ।यह प्यार उसकी अपरिपक्व विद्रोही आकांक्षाओं तथा आधुनिकता की रहस्यमय रोमांटिक भावनाओं का प्रतीक था ।"८ रेखा के दिलो दिमाग पर दीपक छा गया था ।

दीपक का मन कई संदेहों से घिरा था एक ओर उसे अहिल्या को विश्वास में रखना तो दूसरी और वह रेखा को प्राप्त करने का मौका

ढूंढने लगा ।अवसर को भुनाना और अवसर उत्पन्न करना ऐसे लोगों के लिए आसान होता है ।दीपक का दिमाग किसी योजना को शीघ्रातीत अंजाम देने की फिराक में था ।जिस दिन टंडन के घर उसकी इतनी बेइज्जती हुई थी उस दिन से उसने अपना व्यवहार टंडन के प्रति बदल दिया था ।वह अब उससे कम ही बात करता था।अब उसने फिर से टंडन से बातचीत शुरू कर दी ।एक बार फिर वह टंडन का घनिष्ठ हो गया और उसके घर पहुंच गया ।बातों ही बातों में उसने निर्मला से कहलवा दिया कि वह अहिल्या को मिलाने घर ले आए ।घर आकर उसने अहिल्या को कहा कि तुम्हें टंडन के घर घुमा लाता हूं ।अहिल्या ने ना - नुकूर किया और दीपक भी ऐसे दिखाने लगा जैसे टंडन के यहां वह ले जाना नहीं चाहता है।उसने अहिल्या के सामने निर्मला का खाका ऐसा पेश किया जैसे निर्मला को अपने पढ़े-लिखे होने का घमंड हो। ऐसा सुनते ही अहिल्या ने न जाना तय किया पर दीपक ने उसे मना लिया ।दीपक ने सारी योजना बना रखी थी ।

एक दिन का समय लेकर दीपक ने अपनी वांछित तैयारी कर ली थी ।अब रेखा को मिलते हुए उसने बताया कि कल हम दोस्त के घर जा रहे हैं और पूरा दिन वहीं रहेंगे ।उसने रेखा से कहा कि अहिल्या को दोस्त के यहां छोड़कर दिन में वापस आकर दफ्तर का कुछ बाकी काम है, जो वह घर ले आया है तो घर आकर वह काम करेगा।उसने अपनी योजना के अनुसार रेखा से कहा कि काम बहुत ज्यादा है एक आदमी से तो होने से रहा ।उसने रेखा की ओर देखा आप मदद कर दें तो, पर अगले ही पल वह संभल कर बोला आप तो यूनिवर्सिटी जाएंगी आपको तो समय ही नहीं होगा वह ऐसा दिखाने लगा कि काम बहुत है और उसे मदद की आवश्यकता है, उसने रेखा को इस तरह कहा था कि उसने खुद ही अपनी आने की स्वीकृति दे दी ।

अहिल्या अगले दिन बे-मन से टंडन के घर गई,उसके मन में दीपक की बात बार-बार आ रही थी ।उसी के आधार पर उसने निर्मला की एक छवि भी निर्मित कर ली थी दीपक ने इतने दिनों टंडन के घर न जाने का बहाना बच्चे की बीमारी को बनाया था तो जाते ही निर्मला ने अहिल्या से बच्चे की तबीयत पूछी ।अहिल्या पहले तो समझी नहीं फिर बाद में पति के पक्ष में उसने हामी भरी दी ।" परंतु स्त्री दूसरे के घर अपने पति के झूठ का समर्थन करती है क्योंकि ऐसा करना उसके कुटुंब और पति की प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए आवश्यक होता है खास तरह से किसी जवान स्त्री से उसका पति झूठ बोलता है तो उसको एक अनजान खुशी भी होती है जैसे इससे पति की वफादारी की पुष्टि होती हो।"९ स्त्री स्वभाव कोमल होता है, वह अपने घर की बात बाहर नहीं निकलना चाहती साथ ही वह अपने पति पर विश्वास कर उसके अनुरूप चलने का ही प्रयत्न करती है।निर्मला के साथ थोड़ा समय बीताने पर अहिल्या को निर्मला घमंडी नहीं लगी वह उसके साथ जल्दी ही घुल मिल गई ।बातों ही बातों में अहिल्या ने रेखा की बात की जिसे सुनकर निर्मला को विश्वास हो गया कि दीपक कुछ तो अलग परंतु गलत कर रहा है।उसका मन आशंकाओं से भर गया था निर्मला ने अपनी बातों से अहिल्या को सचेत करने की चेष्टा भी की परंतु अहिल्या उसे ठीक से समझ नहीं पायी ।

टंडन और दीपक खाना खाकर घर से दफ्तर की ओर निकले दफ्तर के दरवाजे पर पहुंच कर दीपक ने ऐसा दर्शाया कि जैसे कोई जरूरी कार्य करना भूल गया ।अपनी स्थिति बताते हुए उसने टंडन को कहा कि उसका कोई मित्र आया है जिससे उसे मिलने जाना है ऐसा कह कर उसने अपनी छुट्टी की अर्जी टंडन को दे दी और वह वहां से रवाना हो गया।अपने नियत समय पर वह घर पहुंच गया और बेसब्री से रेखा का इंतजार करने लगा ।रेखा भी सुबह से दीपक के घर जाने की प्रतीक्षा कर रही थी ।वह अपनी मां से किताब का बहाना कर दोपहर में दीपक के घर चली आई ।मौका देखकर दीपक को जो अभिसिप्त था वह रेखा को आलिंगन कर हासिल कर लिया।इस घटना के बाद दोनों में ही एक अलग ही प्रवृत्ति का जन्म हुआ दोनों ने स्वयं को विश्व विजेता मान लिया।रेखा जब थोड़ी देर बाद दीपक के घर से निकल रही थी तभी उनके पड़ोसी बब्बू की मां ने उसे देख लिया ।उसने पूछा कि अहिल्या आ गई, रेखा उसे देखकर घबरा गई तो उसने केवल हां कह दिया और तेजी से वहां से चली गई।

इस घटना के बाद कई तरह के परिवर्तन हुए दीपक का व्यवहार अहिल्या की ओर से बिल्कुल बदल गया रेखा भी अहिल्या से घृणा करने लगी ।"अहिल्या के बारे में उसने कभी सोचा नहीं था परंतु अब अहिल्या को देखते ही उसका हृदय ईर्ष्या और घृणा से भर उठता ।वह घर पर अपनी मां से अहिल्या की बहुत निंदा करती।"१० जब से वह दीपक के करीब आयी तब से उसे अहिल्या बुरी लगने लगी।कहीं ना कहीं वह दीपक और स्वयं के बीच उसे दीवार मानने लगी ।जिससे उसकी घृणा और ईर्ष्या बढ़ती जा रही थी।धीरे-धीरे उसने अहिल्या को नीचे दिखाना भी शुरू कर दिया।निर्मला के घर से लौट के बाद जब रेखा की माँ ने बताया कि मेहमान उस दिन घर पर ही थे ।रेखा उनके घर कोई किताब लेने आयी थी ।अहिल्या के मन में निर्मला की बातें रह कर आने लगी।वह दीपक और रेखा के व्यवहार में बदलाव को भी महसूस कर रही थी, अब उसे शक होने लगा था परंतु दीपक से बात करने पर उसने अहिल्या को समझा दिया ।अब वह सतर्क हो चुकी थी ।

बब्बू की माँ दिन में आई और अहिल्या को बताया कि आज बब्बू के बाबा ने पार्क में दीपक और रेखा को साथ देखा ।साथ ही बब्बू की मां ने उस दिन भी रेखा को दिन में घर पर देखा जब अहिल्या निर्मला के वहाँ गई थी।वह विलाप करने लगी और रेखा और उसके परिवार को भला बुरा कहने लगी ।रेखा जब शाम को घर आयी तो अहिल्या ने उसे जम कर लताड़ लगायी ।जिसके बाद रेखा क्रोधित हो गई और कह गयी कि वह उसके घर पर नहीं आएगी ।रेखा ने यह सारी घटना दीपक को बतायी और उम्मीद की कि वह अपनी पत्नी के खिलाफ जरूर कोई कदम उठाएगा ।दीपक ने उसे आश्वासनों से शांत किया।अब रेखा की शिकायतें दीपक के मन में नए विचार ला रही थी।अब दीपक का चरित्र उसकी पत्नी जानती थी जो प्रेम दीपक छुप-छुप कर करना चाहता था ।दीपक और अहिल्या में भी तनाव था दीपक और अहिल्या दोनों एक दूसरे की सच्चाई जानते थे।

दीपक का मोह अब रेखा से केवल शारीरिक ही हो गया था ।वह स्वयं को निर्दोष बताने हेतु मन ही मन रेखा को धिक्कारता

रहता।रेखा यदि उसे अपने रूप यौवन में ना फंसाती तो वह एक पवित्र व्यक्ति होता ।दीपक अब रेखा से संबंध केवल मतलब के लिए ही रखना चाहता था ।अहिल्या के विरोध के बाद वह काफी सतर्क हो गया था ।कुछ दिनों बाद वह अचानक से आंगन में अकेला सोने लगा ।एक रात वह धीरे से उठा और घर के पीछे वाली गली की ओर गया ।अहिल्या भी पीछे-पीछे हो गयी क्योंकि जब से वह आंगन में सोने लगा था तब से उसे संदेह हो गया था ।दीपक पीछे वाले दरवाजे से बाहर निकला वहीं रेखा उसके प्रतीक्षा कर रही थी।दोनों रेखा के घर की ओर जाने लगे तभी अहिल्या पहुंच गई उसे देखते ही रेखा गली के अंधकार में भाग गई और अहिल्या ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया । दीपक ने उसे विनती की और घर में लाकर उसे समझाने लगा ।अहिल्या विक्षिप्त - सी सब कुछ छोड़कर जाने की जिद करने लगी ।दीपक ने उसे समझाने के सारे पेंतरे प्रयुक्त किया और अंत में स्वयं को निर्दोष बताने के लिए उसने सारी गलती रेखा की बता दी "तुम तो जानती हो कि सीधे-साधे मर्दों को ऐसी औरतें किस तरह ठग लेती है इनको इसकी कला आती है। यह लड़की तो यूनिवर्सिटी की बहुत चालू लड़की है ।"११जब वह यह सब अहिल्या को कह रहा था तभी रेखा अनहोनी की आशंका से डरी हुई दीपक के घर के बाहर से यह सब सुन लेती है ।उसे विश्वास ही नहीं हो पाता की दीपक ऐसा सोचता है।

इस घटना के कुछ दिनों तक दीपक रेखा से नहीं मिला परंतु उसका मन उसके लिए व्यथित होता रहता ।एक दिन वह रेखा से मिलने यूनिवर्सिटी जाता है जहां रेखा उससे मिलते हुए कहती है कि वह तो आवारा है,उसने दीपक को फंसाया है, वह दीपक को कहती है कि वह एक पथभ्रष्ट लड़की थी उसने जीवन की महत्ता को समझा ही नहीं, दीपक को अब उस जैसी लड़की से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए।दीपक यह सब सुनकर सन्न था कि रेखा को उस रात की यह बातें कैसे मालूम चली ।रेखा के द्वारा आईना दिखाने पर वह रेखा के प्रति क्रोध और घृणा से भर गया उसने स्वयं को संयत पाया और वह फिर मन में सोचने लगा, अच्छा हुआ जो ऐसी लड़की से पीछा छुटा,अब वह पवित्र जीवन अपनाएगा ।अपने घर और बीवी, बच्चों पर ध्यान देगा अब उसके रास्ते में कोई रुकावट नहीं.....।

पराई डाल का पंछी उपन्यास उस युवा वर्ग की कहानी है जो स्वयं से एवं सारी व्यवस्था से असंतुष्ट है ।यह वर्ग अपने को छोड़कर सभी में बदलाव चाहता है ।उसकी दुनिया अपने स्वार्थ को हासिल करने की कोशिश मात्र है और जो हासिल नहीं हो पाता उसमें दोष देकर ये बरी हो जाते हैं ।विश्लेषणात्मक शिल्पी विधि का यह उपन्यास असंतुलित व्यवहार वाले अप्रकृत चरित्र की संरचना करता है।अमरकांत ने दीपक के रूप में ऐसे वर्ग की सच्चाई को दर्शाया है जो कोरे आदर्शवाद एवं स्वनिर्मित कल्पित समाज में ही जीते हैं।अमरकांत ने उपन्यास में अपने शिल्प और भाषा से नहीं ऊर्जा भरी है परंतु उनका मुख्य कार्य दीपक जैसे चरित्रों को उजागर करना रहा है जिसमें वह सफल हुए हैं ।लेखक पाठक में घृणा उत्पन्न करता है तो परिस्थितियों का विश्लेषण करने की क्षमता पर भी जोर देता है ।उनका यह उपन्यास पुनः विश्लेषण की जोरदार मांग करता है क्योंकि इन परिस्थितियों का आज फिर से निर्माण होने लगा है ।

संदर्भ सूची –

१ अमरकांत- पराई डाल का पंछी, पृ. सं. 15

२ वही, पृ.सं. 25

३ वही, पृ.सं.25

४ प्रेम भटनागर- हिंदी उपन्यास शिल्प:बदलते परिप्रेक्ष्य, पृ सं. 50

५ अमरकांत- पराई डाल का पंछी, पृ.सं.38

६ वही,पृ.सं.50

७ वही, पृ.सं.55

८ वही, पृ.सं.113

९ वही, पृ.सं.145

१० वही, पृ.सं.160

११ वही, पृ.सं.180